Q- रूसी क्रांति के कारणों ~~का उल्लेख करें~~ तथा इसके परिणामों का उल्लेख करें।

Ans- 1917 ई० की रूसी क्रांति 20 वीं सदी के विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस क्रांति का प्रभाव सिर्फ रूस या यूरोप पर ही नहीं ~~पड़~~ वरन विश्व के अनेक देशों पर पड़ा। इस क्रांति के द्वारा रूस में निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी जारशाही शासन का अंत हुआ तथा पहली बार मजदूरों एवं किसानों की सत्ता स्थापित हुई। वस्तुतः मार्क्स द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक समाजवाद की विचारधारा को मूर्त रूप पहली बार रूसी क्रांति ने ही ~~प्रदान~~ किया।

कारण :-

1917 ई० की रूसी क्रांति के प्रमुख कारण थे-

(i) निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी जार का शासन,
(ii) अयोग्य एवं भ्रष्ट नौकरशाही,
(iii) किसानों तथा श्रमिकों की विपन्नता,
(iv) सामाजिक एवं आर्थिक असमानता,
(v) समाजवादी विचारधारा का ~~प्रभाव~~ विकास,
(vi) सांस्कृतिक कारण - जार की रूसीकरण की नीति,
(vii) बौद्धिक कारण - प्रगतिशील चेतना का विकास,
(viii) रूस-जापान युद्ध (1905) तथा
(ix) तत्कालिक कारण।

(2)

(i) निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी जार का शासन :-

रूस की स्वेच्छाचारी जार शासक राजत्व के दैवी सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। वे इस सिद्धान्त पर विश्वास करते थे कि जार रूस का एकाधिपति है और वह संसार में किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं है। जार, निकोलस द्वितीय ने रूस में क्रूर दमन की नीति अपनाई थी। रूसी नागरिकों को किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे, बौद्धिक गतिविधियों पर कठोर नियंत्रण था, प्रेस की स्वतंत्रता नहीं थी। रूस में निरंकुश शासन उस काल में मौजूद था, जब 19 वीं शताब्दी में यूरोप के देशों में महत्वपूर्ण राजनैतिक परिवर्तन हो रहे थे। यूरोप में संवैधानिक राजतंत्र अथवा गणतंत्र की स्थापना हो रही थी जिसमें नागरिकों को अधिकार प्राप्त थे। ऐसी स्थिति में रूस के जारशाही की निरंकुशता जनता के लिए असहनीय हो रही थी और वह जारशाही के विरुद्ध संगठित होने लगी।

(ii) अयोग्य एवं भ्रष्ट नौकरशाही :-

रूस में जारों ने उच्चपदों पर कुलीन वर्ग के लोगों को नियुक्त किया, जिनमें सामंत एवं जमींदार शामिल थे। ये स्वयं भी स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश शासन में विश्वास रखते थे। नौकरशाही वंशानुगत स्वरूप लिए हुए थी। इस भ्रष्ट एवं अयोग्य नौकरशाही ने जनता को और भी आक्रोशित कर दिया।

(iii) किसानों एवं श्रमिकों की विपन्नता :-

कृषि प्रधान देश होने के कारण रूस में

कृषकों का एक बड़ा वर्ग निवास करता था, लेकिन उनकी स्थिति निम्न थी। रूस में 67% भूमि कुलीन जमींदारों के हाथों में तथा 13% भूमि चर्च एवं धार्मिक पुजारियों के अधिकार में थी। बहुसंख्यक किसान भूमिहीन थे और उन्हें जमींदारों की भूमि पर कार्य करना पड़ता था। जमींदार किसानों से बेगार (कोरवी) लेते थे। अपनी दयनीय अवस्था के कारण किसानों में व्यापक असंतोष था। अतः क्रांतिकारी समाजवादी दल ने कृषकों की स्थिति का लाभ उठाकर उन्हें शासन के विरुद्ध खड़ा किया।

रूस में औद्योगीकरण की शुरुआत 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुई। इसके लिए पूँजी प्रायः विदेशों से आई। विदेशी पूँजीपतियों ने मुनाफे को प्रमुखता दी तथा श्रमिकों के हितों को नजरअंदाज किया। श्रमिकों के कार्य के घण्टे एवं मजदूरी निश्चित नहीं थी। आर्थिक क्षतिपूर्ति का भी कोई प्रावधान नहीं था। उनके आवास, सफाई, स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन इत्यादि की भी उचित व्यवस्था नहीं थी। श्रमिक मजदूर संघ भी स्थापित नहीं कर सकते थे। कुल मिलाकर श्रमिकों की कार्यदशाएँ अत्यन्त दयनीय थी और उनमें व्यापक असंतोष था। 1898 में गठित "Social Democratic Labour Party" ने श्रमिक असंतोष को समाजवादी क्रांति में तब्दील कर दिया।

(iv) सामाजिक एवं आर्थिक असमानता :-

रूसी समाज मुख्यतः दो असमान वर्गों में विभाजित था। प्रथम, विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग जिसमें सामंत, कुलीन, भू-स्वामी, जार के कृपापात्र और बड़े पूँजीपति

शामिल थे तथा दूसरा अधिकारविहीन वर्ग था, जिसमें किसान, मजदूर, मध्यवर्ग, शिक्षक, बुद्धिजीवी इत्यादि सम्मिलित थे। प्रथम वर्ग संपन्न था तथा इसकी संपन्नता किसान और मजदूरों के परिश्रम से थी। अतः अधिकारहीन वर्गों में उच्चवर्गों के विरुद्ध घृणा का भाव व्याप्त था। यह वर्ग उत्पादन के साधनों का समाजीकरण करने के पक्ष में था।

(v) समाजवादी विचारधारा का विकास:
औद्योगिक क्रांति के पश्चात यूरोप में समाजवादी विचारधारा अस्तित्व में आई थी। रूस में भी औद्योगिक क्रांति के पश्चात समाजवादी विचारधारा का प्रसार होने लगा। इन समाजवादियों का मुख्य उद्देश्य मजदूरों की कार्य एवं आवासीय दशाओं में सुधार करना था। फलस्वरूप रूस में 1898 में 'Social DemoCratic Party' तथा 1902 ई० में "Socialist Revolutionary Party" की स्थापना हुई। जहाँ SRP किसानों को संगठित कर क्रांति लाना चाहता था वहीं SDP सर्वहारा वर्ग को क्रांति का मुख्य आधार मानता था। 1903 ई SDP दो भागों में बँट गया — (i) 'बोल्शेविक', जो बहुमत में था तथा (ii) मेनशेविक, जो अल्पमत में था। इनमें मेनशेविक क्रमशः परिवर्तन चाहते थे जबकि बोल्शेविक क्रांतिकारी रास्ता अपनाकर मजदूरों का शासन स्थापित करना चाहता था। बोल्शेविक दल को लोकप्रिय बनाने में लेनिन (पूरा नाम — ब्लादिमिर इलिच उलियानोव) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(vi) जार का रूसीकरण की नीति:
रूस में विभिन्न जातियाँ निवास करती

जैसे - रूसी, यहूदी, पोल, उज्बेक, तातर इत्यादि। इन सबकी अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक परम्परा थी। जारशाही इन जातियों की अपनी संस्कृति छोड़कर रूसीकरण हेतु मजबूर कर रही थी। जार एले-क्जैण्डर तृतीय (1881-94) ने तो "एक जार, एक चर्च और एक रूस" का नारा दिया था। इसके कारण गैर रूसी जातियाँ जारशाही की कट्टर विरोधी बन गई थी।

(vii) बौद्धिक कारण - प्रगतिशील चेतना का विकास :-

इस समय टॉल्सटॉय, तुर्गनेव, मैक्सिम गोर्की, चेखव, दोस्तोवयस्की जैसे उच्च कोटि के उपन्यास एवं कहानी-नाटक लेखकों ने बौद्धिक चेतना को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लियो टॉल्सटॉय ने "War-& Peace" के माध्यम से रूसी जनता में गौरव की भावना भरी। इस पुस्तक में उसने नेपोलियन द्वारा रूस पर आक्रमण और रूस में नेपोलियन के पराभव का उल्लेख किया है। गोर्की तो स्वयं भी बोल्शेविक दल का सदस्य था। उसने 'मदर' (माँ) नामक एक क्रांतिकारी कृति की रचना की। इन सबके प्रभाव में एक सशक्त बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुआ।

(viii) रूस-जापान युद्ध (1905) :-

औद्योगिक क्रांति के बाद उपनिवेशों की तलाश में जापान ने चीन के मंचूरिया क्षेत्र पर रूस के अधिकार को चुनौती दी। परिणामस्वरूप दोनों देशों के

के मध्य युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में रूस की पराजय ने उसकी महानता को मिथ्या साबित कर दिया। रूसी जनता अब खुलकर देश की दुरावस्था के लिए जार-शाही की कमी बताने लगी। 9 जनवरी 1905 (रविवार) के दिन जब जनता सेंटपीटर्सबर्ग की सड़कों पर शांतिपूर्ण जुलूस निकालकर राजमहल की ओर बढ़ रहे थे, तो शाही सेना की गोलियों से हजारों मजदूर मारे गये। (यह दिन इतिहास में खूनी रविवार - Bloody Sunday के नाम से जाना जाता है) इस घटना ने देश भर में जारशाही के विरुद्ध असंतोष की लहर पैदा कर दी। यद्यपि इस घटना के पश्चात जार निकोलस द्वितीय ने पार्लियामेंट (ड्यूमा) की स्थापना की, परन्तु यह सिर्फ दिखाने के लिये था। वस्तुतः इस समय रूस में किसानों, मजदूरों एवं औद्योगिकों में आत्मविश्वास पैदा हो चुका था और वे वर्ग-संघर्ष को तैयार हो गये थे।

तात्कालिक कारण :- प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की भागीदारी :

जारशाही की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा ने रूस को प्रथम विश्वयुद्ध में ढकेल दिया। रूस मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हुआ था। युद्ध में रूसी सेनाओं की निरंतर पराजय से सैनिक तो क्षुब्ध थे ही रूस की जनता भी इसे राष्ट्रीय अपमान के रूप में देखने लगी थी। देश में दैनिक उपयोग की वस्तुओं के अभाव ने आम जनता को क्षुब्ध कर दिया था। भ्रष्ट और निकम्मी नौकरशाही किसी भी

प्रकार के सुधारों के प्रति उदासीन बनी रही। दरबारी षड्यंत्रों में वृद्धि हुई, और 1916 में रासपुतिन की हत्या कर दी गई। वस्तुतः रूसी जनता की अपने कष्टों का कारण शासन की अयोग्यता में नजर आ रहा था। अतः प्रथम विश्वयुद्ध ने रूस में क्रांति की प्रक्रिया एवं पटनाक्रमों को तीव्र कर दिया।